2

लैंगिक समानता की अवधारणा और महिला शिक्षक की भूमिका

चित्रा सिंह*

लैंगिक समानता की अवधारणा समाज में व्याप्त स्त्री-पुरुष के बीच मौजूद असमानता को दूर करने की एक रणनीति है। इसके द्वारा उन ऐतिहासिक और सामाजिक प्रतिरोधों को दूर करने का प्रयास किया जाता है जो कि स्त्री और पुरुष को समान होने से रोकते हैं। इनमें वे सकारात्मक क्रियाएँ भी शामिल हैं जो स्त्री के प्रति एक विशेष व्यवहार को इंगित करती हैं। लैंगिग समानता की रणनीति शिक्षक को ध्यान में रखते हुए तैयार करना दो कारणों से ज़रूरी है – पहला, यह एक अंतर्राष्ट्रीय उद्देश्य भी है, और दूसरा, शिक्षक इसमें केंद्रीय भूमिका रखते हैं। यूनेस्को ने अपने ग्लोबल पोस्ट–2015 के एजुकेशन एजेंडा में इसे मुख्य स्थान दिया है। स्त्री-शिक्षक इस मामले से ज़्यादा कारगर भूमिका निभा सकती हैं, वे इसे ज़्यादा अच्छी तरह महसूस कर सकती हैं कि लैंगिक असमानता ने किस तरह समाज और उसके विकास को प्रभावित किया है। क्योंकि स्त्री-शिक्षक कभी न कभी इसका शिकार भी रही ही होती हैं। प्रस्तुत आलेख में इस दिशा में स्त्री-शिक्षक की भूमिका और प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए कुछ मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. के पोज़ीशन पेपर *नेशनल फ़ोकस ग्रुप ऑन जेंडर इश्यूज़* के बिंदु 2.6 — टीचर्स एज़ एजेंट ऑफ़ चेंज में शिक्षक के लिए Pronoun 'Her' का प्रयोग किया गया है 'His' का नहीं। इससे पता चलता है कि महिला-शिक्षक की शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक असमानता दूर करने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है और आगे भी उसे इस दिशा में उत्प्रेरक ही नहीं, बल्कि सूचना के प्रसारण में मुख्य भूमिका अदा करने वाला बताया गया है। यह सिर्फ़ नीतिगत रूप से ही सही नहीं है वरन् स्वाभाविक भी है, अंततः यह स्त्री ही है जो मानव की प्रथम शिक्षक होती है। ऐसा कहना उसकी भूमिका को सीमित करना नहीं है बल्कि उसके नैसर्गिक गुणों का अधिकतम उपयोग करने की दिशा में एक प्रयास है, क्योंकि जो हम स्वाभाविक रूप से करते हैं उससे हम कहीं

* *सहायक प्राध्यापक,* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

ज़्यादा आगे बढ़ सकते हैं। यदि हम लैंगिक समानता के लिए स्त्री-शिक्षक की भूमिका को केंद्र में रखते हैं तो हम वे लक्ष्य आसानी से पा सकते हैं विशेष रूप से वे लक्ष्य जो ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से ज़्यादा कठिन हैं।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था के साथ सकारात्मक बात यह है कि स्त्री-शिक्षक अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं, अन्य किसी क्षेत्र की तुलना में। दुनिया के विकसित देशों में भी ऐसा नहीं है, जबकि भारत में शिक्षा को स्त्री के लिए बेहद स्वाभाविक और सुविधापूर्ण व्यवसाय माना जाता है और उन्हें इसे अपनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित भी किया जाता है। यही नहीं शिक्षा संस्थानों के प्रमुख पदों, जैसे – प्राचार्य पद, विशेष रूप से विद्यालयी शिक्षा में, के लिए महिला को ज़्यादा उपयुक्त माना जाता है और अधिकांश विद्यालयों के प्राचार्य पदों पर हम उन्हें नियुक्त देख सकते हैं।

इसलिए ज़रूरी हो जाता है कि लैंगिक समानता की दिशा में उनकी भूमिका पर ज़ोर दिया जाए ताकि इसके उद्देश्यों की पूर्ति आसानी से हो सके।

स्त्री-शिक्षक का लड़कियों की शिक्षा पर प्रभाव

एन.सी.ई.आर.टी. का उपयुक्त लेख स्त्री-शिक्षक की भूमिका को लड़कियों के अधिकाधिक शिक्षा लेने से जोड़ता है। विद्यालयों में स्त्री-शिक्षक होगी तो लड़कियाँ विद्यालयों में ज़्यादा प्रवेश लेंगी, ऐसा माना जाता है, और यह सच भी है। लेकिन वे कहते हैं कि यही एक मात्र वजह नहीं होनी चाहिए। यदि स्त्री-शिक्षक को केंद्रीय भूमिका निभानी है तो स्त्री-शिक्षक के विद्यालयों में जीवन अनुभवों, शिक्षक-प्रशिक्षण की प्रासंगिकता और सब तक पहुँच और इस व्यवसाय में उसके करियर के विकास पर भी ध्यान देना होगा। लैंगिक समानता के परिप्रेक्ष्य में उनकी भूमिका मज़बूत तब ही हो सकती है जब शिक्षण कार्य में उनका अनुभव सकारात्मक हो। यही समाज में उनके स्थायी प्रभाव को प्रेरित कर सकता है। लेकिन स्त्री-शिक्षक को केवल लड़कियों की शिक्षा के संदर्भ में ही आगे नहीं किया जाना चाहिए बल्कि लड़कों की शिक्षा में भी उनकी अहम भूमिका होनी चाहिए। लैंगिक समानता असल में तभी पाई जा सकेगी।

स्त्री-शिक्षक–छात्राओं की उत्प्रेरक के रूप में

प्राथमिक विद्यालय स्तर पर लड़कियों के प्रवेश में स्त्री-शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। समाज की जो हालत अभी तक है उसमें परंपरागत रूप से लड़कियों की शिक्षा कन्या विद्यालय में स्त्री-शिक्षक द्वारा दिए जाने को महत्त्व दिया जाता है। रूढ़िवादी समाज इसके लिए हमेशा तैयार रहता है। ऐसे में स्त्री-शिक्षक छात्राओं के पक्ष में उनके परिप्रेक्ष्य में और उनकी ज़रूरतों तथा उनके अनुकूल वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. के उपर्युक्त लेख में छात्राओं की शिक्षा के संदर्भ में स्त्री-शिक्षक की विभिन्न भूमिकाओं का भी उल्लेख है, उसमें बताया गया है कि–

- स्त्री-शिक्षक छात्राओं के लिए आदर्श भी स्थापित कर सकती हैं।

- छात्राएँ बीच में विद्यालय न छोड़ें इसमें विद्यालय में स्त्री-शिक्षक की उपस्थिति महत्वपूर्ण कारक हो सकती है।

इन व्यावहारिक कारणों के इतर स्त्री-शिक्षक छात्राओं को एक सुरक्षित, तनावरहित तथा खुला वातावरण प्रदान करने में भी सहायक हो सकती हैं। छात्राएँ अपनी बात पुरुष-शिक्षक के बनिस्बत स्त्री-शिक्षक से आसानी से कह सकती हैं, उससे सहज रूप से बात कर सकती हैं और अपना दृष्टिकोण भी बाँट सकती हैं, जो पुरुष-शिक्षक के साथ आसान नहीं होता। यही समस्या छात्रों की स्त्री-शिक्षक को लेकर भी हो सकती है। वे भी पुरुष शिक्षक के साथ आसानी से खुल के अपनी बात कह सकते हैं। इस मनोवैज्ञानिक और व्यवहार संबंधी समस्या का समाधान भी खोजा जाना चाहिए। जहाँ एक ओर पुरुष-शिक्षकों को छात्राओं के शिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किए जाने की आवश्यकता है वहीं स्त्री-शिक्षक को भी छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

इस लेख में एक और मुख्य बिंदु है, वह है स्त्री-शिक्षक का एक नीति-निर्माता के रूप में योगदान। छात्राओं की स्थिति सुधारने और उनकी समस्याओं को हल करने में यह महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। बस ये सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि स्त्री-शिक्षकों की भूमिका केवल बैठकों और सामान्य गतिविधियों तक ही सीमित न रह जाए बल्कि छात्राओं की प्रवक्ता की हैसियत से भी वे नीति-निर्माण में दखल दें। दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु हर स्तर पर और हर विषय में स्त्री-पुरुष शिक्षक संतुलन पर ज़ोर देता है। स्त्री और पुरुष शिक्षकों के बीच विषयों का बँटवारा-सा कर दिया गया है। भाषा, कला और सामाजिक विज्ञान के विषय स्त्री-शिक्षकों के स्वाभाविक विषय मान लिए गए हैं और गणित तथा विज्ञान पुरुष-शिक्षकों के। यदि यह असंतुलन दूर कर दिया जाए और गणित तथा विज्ञान जैसे विषय भी स्त्री-शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जाने लगें तो छात्राओं में भी इन विषयों के प्रति रुचि जाग्रत होगी। ये वे विषय हैं जो लड़कों के विषय माने जाते हैं। इस पद्धति में परिवर्तन किया जाना चाहिए। स्त्री-शिक्षक के लिए माने जाने वाले विषयों को पुरुष-शिक्षकों द्वारा भी पढ़ाया जाना चाहिए।

यह दृष्टि लैंगिक समानता के विकास में महत्वपूर्ण हो सकती है किंतु इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए की नैसर्गिक क्या है। यदि कोई छात्रा स्त्री-शिक्षक के लिए ही समझे जाने वाले विषयों में रुचि रखती है तो उसे इसके लिए पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जो उसी विषय की स्त्री-शिक्षक बेहतर तरीके से दे सकती है। इसी तरह यदि कोई स्त्री-शिक्षक भी इन विषयों में स्वयं को स्वाभाविक रूप से झुका पाती है तो इसके लिए भी अनुकूल आधार प्रदान किया जाना चाहिए।

स्त्री-शिक्षक की समस्या–लैंगिक समानता के परिप्रेक्ष्य में

इस बिंदु को हम न्यूयॉर्क की एक माध्यमिक शाला शिक्षिका एमी विलियम्स के उदाहरण से बेहतर समझ सकते हैं, वे लिखती हैं–

"मैं वह दिन कभी नहीं भूल सकती जब शिक्षण के अपने प्रारंभिक दौर में एक दिन एक पुरुष-शिक्षक गलती से मेरी कक्षा में चला आया, यहाँ तक तो सब नॉर्मल था लेकिन इसकी जो प्रतिक्रिया छात्रों में हुई वह विचलित कर देने वाली थी। लगातार बात करते रहने वाले मेरे 8वीं कक्षा के बच्चे इससे एकदम सतर्क हो गये, सीधे बैठ गए और ध्यान से मुझे सुनने लगे। ये मेरे लिए आश्चर्यजनक था क्योंकि इन्हीं छात्रों का ध्यान खींचना मेरे लिए मुश्किल होता था, जबकि मैं अत्यंत सावधानी से अपना पाठ तैयार करती थी, कक्षा में उसे पढ़ाती और दोहराती भी थी और यह काफी मुश्किल होता था। मैं स्तब्ध थी कि पुरुष-शिक्षक की क्षणिक उपस्थिति मात्र वह प्रभाव पैदा कर रही थी जो मैं काफी मेहनत के बाद भी पैदा नहीं कर पा रही थी। " (चैपमैन, 1994)

सभी स्त्री-शिक्षक कभी न कभी मिलती-जुलती परिस्थितियों से दो-चार होती ही हैं। विशेष रूप से छात्रों द्वारा उन्हें गंभीरता से नहीं लिया जाना इसका कारण होता है। इसके लिए हमारी सामाजिक संरचना ज़िम्मेदार है। सबसे पहले इसे बदलना होगा। लेकिन यह एक समय लेने वाली योजना है और काफ़ी लंबी लड़ाई है, अतः शिक्षिका को ही इसके लिए तैयार करना सबसे ज़्यादा आवश्यक है।

उपर्युक्त शिक्षिका ने इस स्थिति से निपटने के लिए क्या किया? इस बारे में निम्न बिंदु वे हमारे सामने रखती हैं। ये स्त्री-शिक्षक के लैंगिक समानता के लिए दिए जाने वाले प्रशिक्षण के प्रमुख बिंदु भी हो सकते हैं। वह लिखती हैं कि उन्होंने इस बारे में अपने गुरु की सलाह मानी और यह किया। वे आगे लिखती हैं कि–

"सबसे पहले मैंने अपनी आवाज़ ऊँची की और स्वयं को छात्रों के समक्ष तने कंधों के साथ प्रस्तुत किया। यह एक सिद्ध बात है कि पुरुष हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व चाहता है। कक्षाओं में भी यही दृष्टिकोण काम कर रहा होता है और शिक्षिका का उपर्युक्त बर्ताव छात्रों को उन्हें गंभीरता से लेने के लिए प्रेरित कर सकता है।" (चैपमैन, 1994)

वे आगे लिखती हैं कि अपने अध्यापन के चौथे साल में जाकर उन्होंने कक्षा में अपनी उपस्थिति को मज़बूती से रख इस पारंपरिक अवधारणा को चुनौती देने के प्रयास शुरू किए जो एक शिक्षक, विशेष रूप से एक शिक्षिका को कैसा लगना और दिखना चाहिए, पर ज़ोर देती हैं। उन्होंने देखा कि अधिकांश छात्र अच्छे शिक्षण को अच्छे लैक्चर से जोड़ते हैं, अतः उन्होंने छात्रों को बताया कि सबसे सफ़ल कक्षा गतिविधि वह होती है जिसमें छात्र ही प्रश्न पूछते रहते हैं और अधिकांश समय अपनी बात रखते रहते हैं। सिर्फ़ अच्छा लैक्चर ही काफ़ी नहीं होता।

एक शिक्षिका के रूप में उनके द्वारा किया गया ये नवाचार तमाम शिक्षिकाओं के लिए उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस तरह के नवाचार अभी तक सिर्फ पुरुष आधिपत्य का क्षेत्र ही रहे हैं और एक शिक्षिका भी ऐसा कर सकती है यह सिर्फ़ चौंका देने वाला विषय ही रहा है और हो सकता है।

एक और नवाचार जो उन्होंने किया वह था समावेशी व सहयोगी प्रकृति को बढ़ावा देना जो प्रायः स्त्रियों से संबंधित माने जाते हैं। उन्होंने छात्रों को दूसरे छात्रों के विचारों पर आपसी सहयोग से काम करने को

प्रेरित किया ताकि उनमें उस पाठ के बारे में अंतर्दृष्टि विकसित हो सके जो वे पढ़ रहे थे।

इसका उन्हें परिणाम भी मिला जब एक छात्र ने उन्हें बताया कि इससे उसकी संप्रेषण क्षमता काफी बढ़ गयी थी और उसने कक्षा में पाठ पर चर्चा को और छात्रों के लिए भी सहज और सुविधाजनक बनाना प्रारंभ कर दिया था जबकि पहले वह चर्चा में अपनी धाक जमाने की कोशिश करता था। उसने उन्हें लिखा–

"अब मुझे मेरे साथियों के साथ में काम करना अच्छा लगता है, मैं अनुभव करता रहा था और करता हूँ कि नेतृत्व-क्षमता में मैं हमेशा अव्वल रहा हूँ लेकिन आपकी कक्षा में चर्चाओं ने मुझे पीछे आराम से बैठ अपने साथियों को बोलते व चर्चा करते देखना सिखाया।" (चैपमैन, 1994)

हम देख सकते हैं कि छात्र का इस तरह पिछली सीट पर बैठना नकारात्मक नहीं एक सकारात्मक परिवर्तन था। एक शिक्षिका ही ऐसा परिवर्तन ला सकती है जो नैसर्गिक रूप से चीज़ों और परिस्थितियों को सुविधाजनक बनाती रही है। यह स्त्री ही है जो आधिपत्य नहीं सहयोग में विश्वास करती रही है और तर्क नहीं, भावनाओं को महत्वपूर्ण मानती रही है।

स्त्री के इन्हीं गुणों को जो आधुनिक समय में उसकी कमज़ोरी की तरह प्रस्तुत किए जाते रहे हैं, एक शिक्षिका द्वारा शिक्षण के प्रमुख औज़ारों की तरह विकसित किया जाना चाहिए जैसा उपरोक्त शिक्षिका ने किया।

लैंगिक समानता के लिए शिक्षक-शिक्षिका का प्रशिक्षण—एक तुलना

लैंगिक समानता के लिए जब शिक्षकों के प्रशिक्षण की बात की जाती है तो प्रायः यह पुरुष-शिक्षक पर केंद्रित हो जाती है शिक्षिका प्रायः भुला दी जाती है। पूरी दुनिया में लैंगिक असमानता, जो विद्यालय स्तर पर विद्यमान है, को लेकर जो भी शोध और अध्ययन किए गए हैं, वे प्रायः शिक्षकों और छात्रों पर हैं, शिक्षिकाओं और छात्राओं पर न के बराबर हैं। इनमें सिर्फ़ शिक्षक के कक्षा में छात्राओं की तुलना में छात्रों के प्रति पक्षपातपूर्ण व्यवहार को आधार बनाया गया है और उसमें लैंगिक असमानता को प्रश्नांकित किया गया है। शिक्षिकाओं के बारे में यदि अध्ययन व शोध हैं भी तो उनमें शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रतिशत पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है व इसे ही रेखांकित किया गया है या यह बताया गया है कि स्त्रियों को केवल शिक्षिका के रूप में ही स्वीकारा गया है तथा इस क्षेत्र में भी प्रशासकीय व प्रबंधक पदों पर उनका अनुपात काफ़ी कम है। लैंगिक समानता के प्रति शिक्षिकाओं के व्यवहार व दृष्टिकोण का अध्ययन व इस पर किए गए शोध न के बराबर हैं।

इस अभाव के कारण जहाँ लैंगिक समानता पर शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाना संभव व आसान हो जाता है वहीं शिक्षिकाओं का प्रशिक्षण इतना आसान और संभव नहीं हो पाता। बल्कि इस ओर ध्यान भी नहीं जाता। शिक्षक एक व्यक्ति है यह बात सही है। लेकिन पहले वह एक पुरुष या स्त्री भी है इस बात को

ध्यान में रखा जाए तो इस दिशा में सही सफ़लता प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि लैंगिक समानता के पक्षधर भी यह बात कहते हैं कि विद्यालय में छात्रों को सिर्फ़ यह ही नहीं सिखाया जाना चाहिए कि महिला और पुरुष अलग नहीं हैं वरन् यह भी बताया जाना चाहिए कि वे अलग ज़रूर हैं लेकिन बराबर हैं यही सीख वास्तविक लैंगिक समानता को प्राप्त करा सकती है।

अब हम देखें कि किस तरह शिक्षकों पर लैंगिक समानता को लेकर अध्ययन किए गए हैं। कहा जाता है कि —

- कुछ शिक्षक छात्राओं को कम अर्थपूर्ण व सघन प्रशंसा देते हैं जबकि लड़कों का काम हमेशा उत्कृष्ट बताया जाता है।
- छात्रों की तुलना में छात्राओं के काम को कमतर आँका जाता है।
- छात्रों पर छात्राओं की तुलना में ज़्यादा ध्यान देते हैं।
- छात्रों से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए छात्राओं की तुलना में देर तक इंतज़ार करते हैं।
- छात्रों से आँख मिलाकर बात करते हैं, छात्राओं से नहीं।
- छात्रों के नाम ज़्यादा याद रखते हैं।
- छात्रों को उनके नामों से बुलाते हैं।
- कक्षा में पाठ-चर्चा के दौरान केवल छात्रों के कमेंट्स का ही उल्लेख करते हैं।
- छात्राओं को उनकी बात पूरी होने से पहले ही रोक देते हैं।
- छात्रों से ऐसे प्रश्न पूछते हैं जो उच्च दर्ज़े की विचार क्षमता की माँग करते हैं जो केवल तथ्यों को पेश करने पर आधारित नहीं होते।

इस तरह जब शिक्षकों के कक्षा में व्यवहार को रेखांकित कर लिया जाता है तो उनके प्रशिक्षण के बिंदुओं पर विचार कर लैंगिक समानता के लिए उन्हें तैयार करने में भी आसानी हो जाती है। शिक्षिकाओं पर ऐसे अध्ययन कम ही हैं, अतः उनके प्रशिक्षण पर इस दिशा में काम नहीं हो पाता।

इस आधार पर शिक्षकों को लैंगिक समानता के लिए उन बिंदुओं पर प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे वे लिंग भेद आधारित अपने व्यवहार को समझ सकें और पाठ्यक्रम में मौजूद लैंगिक भेदभाव का प्रतिकार कर सकें। जैसे वे पाठ जिनमें लड़कों को या पुरुषों को उत्साहपूर्ण, बहादुर, आविष्कारी प्रवृत्ति का और ताकतवर बताया जाता है जबकि लड़कियों को शांत, निष्क्रिय और अदृश्य-सा बताया जाता है। शिक्षक को अपनी स्वयं की और पाठ्यक्रम की इस प्रवृत्ति पर काम करना चाहिए। इस तरह शिक्षक पाठ्यक्रम में मौजूद लिंग भेद को पहचान सकेंगे।

उन्हें यह भी बताया जाता है कि पुरुष-शिक्षक छात्रों के लिए एक आदर्श बन सकते हैं। वे छात्रों को बता सकते हैं कि वे सीखने के बारे में कितने उत्साहपूर्ण हैं, उसका महत्त्व जानते हैं और कई तरह से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। उन्हें यह भी बताया जाता है कि छात्र, शिक्षक को पूरी तरह सख्त नहीं पाते हैं और वे अपनी जगह तलाशना चाहते हैं। उन्हें ऐसे शिक्षक पसंद हैं जो कठोर तो हों पर साफ़-सुथरा व्यवहार करते हों। छात्र मानते हैं कि शिक्षक उन्हें ज़्यादा दबाब में नहीं रखते। उन्हें बताया जाता है कि यदि छात्र सुरक्षित महसूस करते हैं तो वे चुनौतियों से सकारात्मक ढंग से निपट सकते हैं। जैसे

छात्र को यह कहना कि– ***क्या तुम यह कर सकते हो? क्या तुम इसके लिए तैयार हो?*** यह उन्हें चुनौती लेने को प्रेरित करता है। छात्र लक्ष्य के प्रति अधिक केंद्रित होते हैं, वे लक्ष्य जो छोटे, मापन योग्य, प्राप्त करने योग्य, यथार्थपूर्ण और समयबद्ध होते हैं। छात्र उन भौतिक और शैक्षिक गतिविधियों का आनंद लेते हैं जो सक्रिय योगदान और शारीरिक क्रियाओं पर आधारित होती हैं। अतः शिक्षक को कम से कम बोलना चाहिए। छात्र देर तक शांत नहीं बैठे रह सकते इसके लिए उन्हें काफ़ी प्रेरणा की आवश्यकता होती है। छात्र करते पहले हैं और सोचते बाद में हैं जबकि छात्राएँ पहले सोचती हैं फिर काम करती हैं। यह छिपे पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum) की अवधारणा पर आधारित है। जिसमें बताया गया है कि शिक्षक छात्रों को इस तरह पढ़ाते और शिक्षा देते हैं कि यह न केवल जातीय और सामाजिक वर्ग की धारणा को मजबूत करता है वरन् लैंगिक संबंधों को भी मज़बूत करता है। शिक्षक का केवल छात्रों पर ध्यान देना और उन्हें ही अपनी बात रखने को प्रेरित करना छात्रों पर यह असर करता है कि वे ज़्यादा सामाजिक हो जाते हैं पर छात्राएँ इससे प्रायः शांत हो जाती हैं और वे यह समझने लगती हैं कि वे अपने साथ के छात्रों से अलग और कमतर हैं। शिक्षक को शिक्षण में इन बातों का ध्यान रखने को कहा जाना चाहिए।

शिक्षिका के प्राकृतिक स्त्री गुणों का लैंगिक समानता में प्रयोग

आई.ए.ई.ई.ए. (International Association for Evaluation of Educational Achievement) द्वारा 14 देशों में किए गए अध्ययनों में यह पाया गया है कि लैंगिक अवधारणा प्रदर्शन को बहुत प्रभावित करती है। अतः यह ज़रूरी हो जाता है कि इस कमज़ोरी को ही एक अस्त्र के रूप में काम में लिया जाए।

इस दिशा में किए गए कई अध्ययनों में स्त्री-पुरुष के मध्य नैसर्गिक रूप से विद्यमान विभिन्नताओं को ध्यान में लाना ज़रूरी है। जैसे कि सबसे बड़ा फ़र्क स्त्री-पुरुष के मस्तिष्क की संरचना में ही है। स्त्रियों के मस्तिष्क का बायाँ भाग ज़्यादा लाभकारी होता है जो पढ़ने-लिखने और बोलने ज़्यादा कारगर है, जबकि उनका दायाँ भाग उन्हें सहानुभूतिपूर्वक व अच्छी तरह से स्वयं की और दूसरों की भावनाओं को समझने में सहायता करता है। इस तरह उनके मस्तिष्क के दोनों भाग आवश्यक शैक्षिक गतिविधियों में सहायता करते हैं।

यह प्राकृतिक तथ्य स्त्री को शिक्षक के रूप में आदर्श प्रत्याशी बनाता है। वे इस व्यवसाय के लिए पुरुषों की तुलना में ज़्यादा अनुकूल साबित होती हैं। शिक्षिकाओं द्वारा छात्राओं पर ज़्यादा ध्यान देना क्योंकि वे शांत और लड़कों की तुलना में कम चाहने वाली होती हैं, से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस धारणा के चलते वे छात्राओं को कक्षा में ज़्यादा सक्रिय और सहभागी बनने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

लेकिन दिक्कत यह है कि शिक्षकों को जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह इस तरह बनाया गया होता है कि इसमें शिक्षक-शिक्षिका की लैंगिक असमानता का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। स्त्री के अनुभव, अपेक्षाओं, दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं का

इसमें ध्यान नहीं रखा जाता। यह 'विकास में महिलाएँ' (Women in Development) की अवधारणा पर आधारित है जबकि उसे 'महिलाएँ और विकास' (Women and Development) की अवधारणा पर आधारित होना चाहिए जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम नैसर्गिक लैंगिक असमानता को ध्यान में रखता है। स्त्री और पुरुष की अलग-अलग आवश्यकताओं को ध्यान में रखता है और लैंगिक असमानता को खुले तौर पर संबोधित करता है।

अतः शिक्षा के क्षेत्र में स्त्री-केंद्रित व्यवसायिक विकास की निम्न रणनीतियाँ तय की जानी चाहिए—

1. यह तय किया जाना चाहिए कि शिक्षण में विकास के सभी अवसर उन्हें समान रूप से उपलब्ध हों और उन्हें उनके बच्चों की देखभाल करने के लिए सुविधाएँ, आवागमन के साधन, और प्रशिक्षण के लिए स्त्री प्रशिक्षक उपलब्ध हों।
2. प्रशिक्षण की सारी सामग्री शिक्षिकाओं की प्राथमिकताओं और मुद्दों से संबंधित होनी चाहिए, जैसा कि राजस्थान के 'महिला प्रशिक्षण केंद्र' द्वारा किया जाता है।
3. शिक्षिकाओं का स्थानीय संगठन तैयार करना– इन संगठनों में शिक्षिकाएँ नियमित रूप से मिलती रह सकती हैं और एक-दूसरे की मदद कर सकती हैं। राजस्थान के "लोकजुम्बिश" कार्यक्रम के तहत "अध्यापिका मंच" इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं। इससे उन्हें अपने अलगाव से सामंजस्य बिठाने, एक साथ आने और व्यवसायिक विकास के अवसर उपलब्ध होते हैं।
4. नई शिक्षिकाओं के निरंतर प्रशिक्षण के लिए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र की किसी बड़ी महिला हस्ती को आदर्श बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि वे अपने विद्यालयों में सहयोग और विकास कर सकें।
5. शिक्षा संबंधी नीति-निर्धारण में शिक्षिकाओं की भूमिका सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि वे सारी प्रशासनिक गतिविधियों में भी भागीदार हों।

विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों – प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लैंगिक संतुलन पर ध्यान देना तथा सभी विषयों में भी यह संतुलन हों, इसका पालन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार शिक्षिकाओं का इस क्षेत्र में योगदान रेखांकित करते हुए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

उपसंहार

लैंगिक समानता का मतलब यह नहीं होना चाहिए कि स्त्री और पुरुष एकसमान हो जाएँ बल्कि यह होना चाहिए कि विकास के अवसर उसके स्त्री या पुरुष होने पर आधारित न हों। शिक्षा इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसके लिए शिक्षिकाओं को अपनी प्राकृतिक और नैसर्गिक क्षमताओं का बेहतर उपयोग करने पर ज़ोर देना होगा। उन्हें यह देखना होगा कि पुरुष-शिक्षक उनका प्रतिद्वंद्वी या आदर्श न हो बल्कि एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उनके बीच हो। वे उनके पुरुष होने पर ज़ोर न देकर अपने स्त्री होने के गर्व को महसूस करें। ऐसा करके वे न केवल छात्राओं

के लिए एक आदर्श स्थापित करेंगी बल्कि छात्रों को भी अपनी सहपाठी छात्राओं के प्रति संवेदनशील और स्वस्थ प्रतिस्पर्धी बनने के लिए प्रेरित कर सकेंगी। वे एक वास्तविक शिक्षक होंगी जोकि सिर्फ़ शिक्षित ही नहीं करता वरन् प्रेरित भी करता है। नीति-निर्माताओं को भी इस ओर प्रयास करना होगा।

ग्रंथ सूची

एन.सी.ई.आर.टी. 2015. एनसीएफ़ 2005. नेशनल फ़ोकस ग्रुप पोजीशन पेपर *जेंडर इश्यूज़ इन एजुकेशन*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

चैपमैन, एमंड. 1994. *जेंडर विसाज़ इन एजुकेशन*. डी'यूविल कॉलेज, कनाडा.

यूनाटेड नेशंस. 2014.'एजुकेशन एज़ द पाथवे टुवर्ड्स जेंडर इक्वलिटी'. *यू.एन. क्रॉनिकल*. यूनाइटेड नेशंस की पत्रिका.

यूनेस्को. 2012. *ए गाइड फ़ॉर जेंडर इक्वलिटी इन टीचर एजुकेशन,* फ्रांस.

रामचंद्रन, विमला. 2015. *जेंडर इश्यूज़ फ्रेमिंग द टीचिंग फ़ोर्स*. न्यूपा, नयी दिल्ली.